श्री गणेशाय नमः

वि. संवत् ख्त्रक को शास्त्रों में प्लवंग नाम की संज्ञा दी है

क्ब अप्रैल सन् ख्क्ब प्रातफ स्त्र बजकर फ्म् मिनट पर वि.संगत ख्त्रक का आंरभ इस प्रकार से बनता है

जिस प्रकार से पृथ्वी पर लोकतांत्रिक राज्य को चलाने के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव कर व्यक्तियों के गुण योग्यता शिक्षा अनुभव आदी के अनुसार पदो पर विराजमान कराया जाता है फिर उनके द्वारा स्वभाव व व्यवहार से क्षेत्रों व शासनतंत्र पर जिस तरह प्रभाव पड़ता है। ठीक उसी तरह सृष्टि कर्ता प्रभु की इच्छा द्वारा निर्माणित आकाशीय कौंसिल में निर्वाचित ग्रहों के शुभ-अशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार के परिणाम अच्छे व बुरे देखने व भुगतने को मिलते हैं।

क्योंकि आने वाला संवत् ख्त्रक रूद्रविंशति का प्रथम संवतसर है तथा शास्त्रों में इसे प्लवंग नाम दिया गया है।

जैसा कि शास्त्रों में उल्लेख है:-

प्लवंगे मध्यमा वृष्टिः रोग-शोकाकुला धरा।
परस्परं द्विषन्तो वै शत्रुमुर्हृत-वैभवा।।

तुषधान्यानि नश्यन्ति मेघो वर्षति माधवे।
प्लवंगे पीड़िता सर्वे भूमिक□पो क्वचिद भवेत्।।
अर्थात् रूद्रविंशति का आर□भक संवतसर होने से यह वर्ष ख्क्ब-ख्क्भ मध्यम वर्षा रोग शोक आदि से प्रभावित करेगा। तरह-तरह के रोगों से शासन को परेशान करेगा व जोड़-तोड़ की राजनीति के लिए शांति परिक्षण व कहीं-कहीं स□ा में परिवर्तन के भी योग बनाएगा राजनैतिक दलों में काफी हलचन देखने को मिलेगी।

विशेष व्यक्तियों प्रतिष्ठित नेताओं, वि यात पुरूषों के लिए सावधानी की जरूरत पड़ेगी, कहीं कहीं राजनैतिक या दलगत या जातिगत हत्याकांड, भयंकर तूफान, प्राकृतिक आपदाओं आदि से भारी जनधन की हानि व शोक का संकेत भी मिलता है।

नववर्ष प्रवेश, चर्तुदशी सोमवार (चढ़वार) होने से श्रावण से अश्विन तक व माघ-फाल्गुन में विशेष कष्टपूर्ण घटनाऐं घट सकती हैं।

इस संवस्सर का राजा व मंत्री दोनों की पदों पर चंद्रदेव का अधिकार होना (यानि मंत्री व राजा दोनों चंद्रमा का होना) भारी अग्निकांड चोरी लूटपाट व अपहरण आदि की घटनों शासनतंत्र के लिए परेशानी बनेगी कहावत ाी सही है कि:-

स्वयं राजा एवं मंत्री अग्निचौरादिजं भयम्

नीरसेश, सस्येश व घनेश इन तीनों पदों पर बुध ग्रह विराजमान है जो कि चन्द्रमा के शत्रु है पर यहां बुध की चंद्रमा के साथ मैत्री जरूर है, तथा सूर्योदय काल भेदानुसार घनेश पद मंगल को भी प्राप्त है, दुर्गेश सूर्य है साथ सूर्योदय कालभेद के अनुसार दुर्गेश पद शनि को भी प्राप्त है, रसेश पद शुक्र को, फलेश पद शनि को व मैघेश पद सूर्य को मिला है।

इस प्रकार शुभ-अशुभ ग्रहों की सं या संतुलन में है, क्रूर ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, शुक्र अधिक प्रभाव में है जो राजनैतिक दृष्टि से विरोध पार्टियों से सूचक हैं।

जगत कुण्डली में सूर्य का मेष राशी में उच्च होकर केतू का साथ होना व शनि व राहु के साथ क/स्त्र समसप्तक योग बनाना यह संकेत देता है कि अमेरिका ईरान, पाकिस्तान, सीरिया आदि देशों में कहीं कहीं प्राकृतिक आपदाओं से भारी जान व माल की संभावना बनेगी। पाकिस्तान, अफगान आदि कुछ मुस्लिम राष्ट्रों ने पावन राष्ट्रों में सžा परिर्वतन तथा विभाजन के भी आसार नज़र आते हैं।

लग्नेश शुक्र का निजक्षेत्र में होना है, शनि का -/क नवमेश व दशमेश होकर म्वां छठे घर में होना अरब राष्ट, कोरिमा, चीन, जापान, बंगलादेश श्री लंका, ईटली तथा कुछ अफ्रिकन देशों

में समुद्री तूफान, हैरिकेन, तथा आंतरिक आपदा व प्राकृतिक आपदा से भारी हानि का संकेत मिलता है। शनि की दृष्टि इस वर्ष पश्चिमी भूभाग पर पड़ेगी व वर्षेश प्रवेश वृषलग्_व व्याघात् योग में होने से भारत के कुछ राज्यों उतरांचल, आसाम, मणिपुर, ज□मूकश्मीर, उड़ीसा, बिहार, महाराष्ट्र पं. बंगाल दिल्ली आदि राज्यों में आंतकी घटनाओं व राजनीतिक घटनाओं से जान व माल की हानि के भी योग बनते हैं। भारत के कुछ दक्षिणी भू-भाग पर समुद्री तूफान कहीं भूक□प आदि प्राकृतिक आपदाओं से भी जान व माल की हानि के योग बनेगें इससे शासन को परेशानी हो सकती है।

भारतवर्ष की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि उच्चस्थान में वक्री राहु के साथ तुला राशि में है। ख मार्च ख्क्ब से ही शनि का भी वक्र होना फ मई क्ब तक सूर्य, बुध-केतु के साथ शनि व राहु का क/स्त्र सम सप्तक योग होना। बुध का अतिचारी होना तथा क- मई ख्क्ब तक कन्या राशि में बैठे मंगल का भी वक्री होना यह सभी ग्रहस्थिति केन्द्रीय शासन तंत्र में राजनैतिक उठापटक का संकेत देती है। परिणाम चौकाने वाले आश्चार्यजनक हो सकते हैं।

जुलाई ख्क्ब तक की ग्रहस्थिति यह संकेत देती है कि मुस्लिम राष्टों में कहीं न कहीं आंतरिक क्रान्ति, शासन परिवर्तन तो कहीं सेना द्वारा सŽाा में हस्तक्षेप करना भी संभव है।

भारत के कुछ राज्यों ज□मू कश्मीर, उŽारांचल , बंगाल, बिहार, आसाम, मणिपुर, उडीसा, छŽीसगढ़, महाराष्ट्र आदि में भयंकर आतंकवादी गतिविधियों पर सरकार के विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

कुछ माओवादी तथा अन्य उग्रवादी ग्रुप भारत के कुछ महानगरों, नगरों में इस समयावधि में विध्वंसक कार्यवाही को अंजाम दे सकते हैं तो कहीं समुद्रीय तटवर्ती भूभाग पर प्राकृतिक प्रकोप, तूफान, सुनामी, भूक□प आदि से भी जान-माल की हानि होने के संकेत मिलते हैं। प्रभु सभी की रक्षा करें।

क्क जुलाई से फ नवंबर तक की ग्रह स्थिति शनि मंगल का एक राशि संबंध व राहु के राशि परिवर्तन से चीन, जापान, इण्डोनेशिया, अमेरिका तथा भारत के कुछ समुद्रतटीय भूभाग

पर कहीं-कहीं विनाशकारी भूक□प या समुद्री तूफान, सुनामी या कहीं ज्वालामुखी या विस्फोट से भारी जान व माल की हानि के योग बन सकते हैं।

भारत के लिए ख्त्र नवंबर क्ष्म से ॅ मार्च क्ष् तक गुरु का मिथुन राशि में वक्री रहना साथ ही ख्क्ष दिस□ बर क्ष्म से प जनवरी क्ष् तक शुक्र का भी धनु राशि मेंवक्री होना इस बात का संकेत देता है कि कश्मीर, हिमाचल, छŽीसगढ़ राज्यों तथा कुछ महानगरों में उग्रवाद जनित कार्यकलापों तथा प्राकृतिक आपदाओं से (भूक□प आदि) भारी जान व माल की हानि के संकेत बनते हैं।

क मार्च ख्क्ष् को मंगल व ख मार्च को शनि का वक्री होना तथा ब फरवरी क्ष् को मंगल का तुला राशि में आकर राहु व शनि के साथ मेल कर क मार्च को वक्री होना, ये सभी ग्रहों का एक राशि में खलत्रयी योग भारत के शासन तंत्र में विशेष बदलाव के योग बनाकर शासन तंत्र को अच्छा करने में योग दे सकता है। नेताओं को मजबूर कर सकता है, ये सभी करने के लिए।

शनि मंगल व स्वभाव से ही वक्री चलने वाले राहु के साथ इन दोनों का वक्री चलना ब मार्च से मई ख्क्ष् तक देश के प्रमुख राजनेताओं तथा देश की सुरक्षा के लिए खतरे की घंटी बजायेंगे। ये तीनों वक्री ग्रह ऐसे समय में गुप्तचर विभागों को विशेष सावधान रहने की जरूरत होगी जिससे जान माल की व देश की उग्रवादियों से रक्षा हो सके।

यह समय चीन व पाकिस्तान की कुनीति से सीमाओं पर विशेष सुरक्षा पर ध्यान देने का है €योंकि शनि, मंगल व राहु ये तीनों तुला राशि में वक्री रहेंगे जो कि प्राकृतिक प्रकोप द्वारा या उग्रवाद द्वारा जान माल की हानि के सूचक होंगे।

इससे भारत की अर्थव्यवस्था को गहरी चिन्ता में जाना पड़ सकता है। महंगाई चरम सीमा पर जा सकती है, जन साधारण में आक्रोश उमड़ सकता है।

ख मई को मंगल व क- जुलाई को शनि ये दोनों वापस मार्गी होंगे। इसे कुछ प्रांतों में दुर्भिक्ष की की स्थिति बनेगी जिससे बाढ़ भूक□प जैसे प्राकृतिक प्रकोप से जान माल की

हानि का संकेत मिलता है व खड़ी फसलों को नुकसान हो सकताा है। क्ब जुलाई को मंगल का शनि के साथ संबंध बनाना फ सित बर रात तक भारतीय शासन तंत्र के लिए भारी कठिनाई युक्त साबित हो सकता है।

क्ब/क्भ अगस्त ख्क्ब

ब.क्ब (ख्त घंटे क्ब मिनट)

संवत ख्स्त्रक स्वतंत्र भारत का म्त्वां वर्ष

स्वतंत्र भारत के म्त्वें वर्ष की कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार कर्क लग्न में सूर्य, उच्च गुरु व शुक्र भारत की प्रभाव राशि मकर पर पूर्ण दृष्टिपात कर रहे हैं।

सूर्य धनेश होकर लग्न में विराजमान है जो कि उच्च के बृहस्पति के साथ है। बृहस्पति षष्टेश व भाग्येश (नवमेश)है तथा भाग्य स्थान पर नवम दृष्टि डाल रहे हैं। साथ में चतुर्थेश व आमेश (ग्यारहवें) भावों के स्वामी शुक्र भी विराजमान हैं।

ये सभी ग्रहों की स्थिति गहरे आर्थिक संकट से जूझते हुए भारत को राहत दिलाने हेतु नई योजनाओं, नए विचार विमर्श, नए कार्यक्रमों के निर्माण करने में काफी मददगार साबित हो सकती हैं। अगर भारत के बुद्धिजीवियों द्वारा रचित प्रोग्राम बनाए जाएंगे तो आर्थिक संकटों से मुक्ति दिलाकर तरक्की की राह पर आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करने में मददगार साबित हो सकती है।

कन्या राशि के राहु का चन्द्र को समसप्तक क/स्त्र दृष्टि से देखना व क्ब जुलाई से तुला राशि स्थित शनि-मंगल का फ सितबर तक साथ रहना भारत के कुछ राजनेताओं के लिए भय का कारक रहेगा। नेताओं के लिए यह समय सीमा प्रांतों पर चीन व पाकिस्तान द्वारा जनित (रचित) हलचल युक्त गतिविधियों भयावह व अशान्त स्थिति को जन्म दे सकता है। इसके लिए सभी दलों का सामूहिक सहयोग की जरूरत पड़ सकती है।

शनि–मंगल व शुक्र की यह स्थिति इस वर्ष में भारत को समुद्री क्षेत्रों से तेल व गैस की बड़ी प्राप्ति का शुभ समाचार देकर एक बड़ी उपलŽध हासिल करा सकती है।

साथ ही इसी समय में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की कुर्सी भी खाली करा सकती है। यह स्थिति प्राकृतिक प्रकोप जैसे तूफान, भूक प, सुनामी या वाहन यान दुर्घटना द्वारा भी कहीं कहीं भारी जान व माल की हानि करा सकती है। वातावरण को अशान्त व गमगीन कर सकती है।

संवत ख्त्र्क विक्रम की आर िभक ग्रह स्थिति यह संकेत देती है कि सžाारूढ़ कांग्रेस खाद्य सुरक्षा बिल, भू–अधिग्रहण बिल, लोकपाल बिल आदि लोभदायक जन लुभाने वाले बिल संसद में पारित कराने का प्रयास कर आने वाले चुनावों के लिए प्रभावशाली पार्टी के रूप में स्वयं को साबित करने का प्रयास करेगी तथा उजागर घोटालों से जनता का ध्यान हटाने के पूरे प्रयास करेगी।

साथ ही क्षेत्रीय पार्टियों को भी कई तरह के प्रलोभन (लालच) देकर वापस सžाा में आने का प्रयास करेगी।

भारत की राजनीति इस समय बड़े चिंतनीय दौर से गुजर रही है। साथ ही बड़े–बड़े उद्यमियों व आम जन का विश्वास खो रही है।

नव वर्ष कुण्डली

संवत ख्त्र्क

प/फ्क मार्च ख्क्ब (ख्ब घं. क्म मि.)

(ॅ.क्म)

नव वर्ष कुण्डली में धनेश (द्वितीयेश) गुरु का अष्टम में होना गहरे आर्थिक संकट से कार्पोरेट वर्ग को सरकार के विरुद्ध ले जाकर रोष पैदा कर सकता है। सहयोगी दलों

(यूपीए) द्वारा सुधार की प्रक्रिया को असंतोषजनक करेगा व परिणाम भी दूरगामी हो सकते हैं।

घोटाले, महंगाई व भ्रष्टाचार आगामी चुनावों में राष्ट्र में अराजकता आक्रोश सŽाारूढ़ पार्टी के लिए बड़ा सिरदर्द बन सकती है। आर्थिक गिरावट की ओर बढ़ते देश भारत का लोकतंत्र 'भोजन गारंटी' जैसी योजनाओं को पूरा करने में असमर्थ नजर आएगा। इससे परिस्थितियां कठिन संकेत देती हैं। आम जन परिवर्तन को पसंद कर सŽाारूढ़ दल को उखाड़ने का प्रयास करता नजर आएगा। एक सुदृढ़ विपक्ष भी एकजुट नजर नहीं आएगा इससे विवशता का माहौल बन सकता है।

क– मई से ग्रह स्थिति राजनीति में अप्रत्याशित परिणामों वाली हो सकती हे। लोकसीाा का सुदृढ़ सरकार या स्थाई सरकार का न बना पाना साथ अपने अपने स्वार्थ की वजह से मेलजोल (खिचड़ी) वाले दलों की सरकार का प्रगति की ओर न जाना देश के लिए दु:खद ही जान पड़ता है।

ज्येष्ठ मास (क्भ मई ख्क्ब से क्फ जून ख्क्ब) चन्द्रमास में भ गुरुवार का होना भी प्राकृतिक प्रकोप दर्शाता है।

आषाढ़ मास (क्ब जून से क्ख जुलाई ख्क्ब) चन्द्रमास में भ शनिवार का होना, क– जून को गुरु का कर्क राशि में आकर शनि से दृष्ट होना व फ जुलाई तक पुनर्वसु नक्षत्र में रहना कहीं-कहीं प्राकृतिक प्रकोप जैसे अतिवर्षा, बाढ़ आदि से बड़े नुकसान को दर्शाता है। कहीं बुध शनि का वक्री होना भी दुर्भिक्ष स्थिति को बनाता है।

क्ख जुलाई ख्क्ब को राहु का कन्या राशि में प्रवेश है जो कि भारत की राशि भी है। क्ब जुलाई से फ सित□बर शनि व मंगल का तुला राशि में साि ख्– जुलाई से बुध का अतिचारी (अस्त) होना यह स्थिति भारत के दिल्ली, ज□मू कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल व छŽाीसगढ़ आदि कुछ राज्यों में तथा कुछ महानगरों में उग्रवाद या प्रकोप द्वारा भारी उठापटक जान माल के नुकसान का संकेत देती है।

क्त्र सित बर को बुधवारी संक्रांति तथा ख्ब सित बर को बुधवारी अमावस्या होने से खप्पर योग बनता है जो कि भयावह दहशतकारक हो सकता है। ख्त्र जुलाई से ख्ब सितबर तक का समय विश्व के कुछ प्रतिष्ठित लोगों तथा राजनेताओं के लिए संघर्षपूर्ण व चिन्ताजनक हो सकता है। कुछ सीमा प्रांत पर विरोधी गतिविधियों से माहौल तनावपूर्ण बन सकता है। शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए सेनाओं को सतर्क रहने की आवश्यकता होगी।

सितबर से अक्तूबर ख्क्ब का समय कहीं-कहीं सŽाा-परिवर्तन का तो कहीं विशेष व्यक्तियों की हत्या आदि से तनावपूर्ण हो सकता है। त्त अक्तूबर को चन्द्रग्रहण है व साथ ही सूर्य व चन्द्र क/त्र समसप्तक है।

क्त्र अक्तूबर को सूर्य का तुला राशि में आना व शनि के साथ होना क- अक्तूबर को शुक्र का भी तुला में आकर सूर्य शनि के साथ होना अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में काफी हलचल कर सकता है। क्त्र अक्तूबर से क्भ नव बर तक का समय पाकिस्तान, चीन व दक्षिण कोरिया आदि कुछ देशों के स्थिति को बिगाड़ने से शांति भंग हो सकती है।

इस शताŽदी का धूम्रकेतु नव बर के आखिर के बाद सूर्य के पास आएगा। यह भयंकर प्राकृतिक प्रोप जैसे भूक प, सुनामी, ज्वालामुखी, उग्रवाद या राजनैतिक उथलपुथल से जनजीवन को त्रस्त कर सकता है। काफी जान माल की हानि पहुंचा सकता है। त्त दिस बर को गुरु का वक्री होना माघ मास (म जनवरी से फ फरवरी) में पांच मंगलवार आना ख जनवरी को मंगलवारी अमावस्या का होना, मंगल का अस्त होना, कुभ राशि में वरिष्ठ विशेष राजनेताओं के लिए अच्छे समाचार नहीं देता। पद रिक्त होना या कष्टपूर्ण परिस्थिति का सामना करना दर्शाता है। साथ ही कहीं-कहीं तटीय इलाकों में भूकप या प्राकृतिक प्रकोप से जान माल की हानि का भी संकेत देता है।

क्ख फरवरी ख्क्भ को मंगल का मीन राशि में आना व अस्त होना, क्भ फरवरी को शुक्र का भी मीन राशि में आना यह क्क मार्च तक की स्थिति रहेगी व क्ब मार्च ख्क्भ को वृश्चिक राशि में शनि का वक्री होना पक्ष विपक्ष में भारी तनावपूर्ण स्थिति को जन्म दे सकता है।

महंगाई चरम सीमा पार कर सकती है। शासन को कई बिल पूरे करने के लिए भारी नोक-झोंक व रोष प्रदर्शनों का सामना करना पड़ सकता है। जनता शासन के विरुद्ध रोड पर उतर सकती है, प्रदर्शन व तोड़-फोड़ हो सकती है।

जुलाई ख्क्ब से अगस्त ख्क्ब तक कहीं-कहीं भारी वर्षा से तबाही तो कहीं-कहीं बाढ़ों से तबाही से व कहीं अकालग्रस्त क्षेत्रों में भारी जान व माल की हानि से आम लोगों को नुकसान झेलना पड़ सकता है।

क्त्र सित बर को बुधवारी संक्रान्ति होना व ख्ब सित बर को बुधवारी अमावस्या का होना खप्पर योग बनाता है। भ् दिस बर तक की ग्रह स्थिति भी प्रमुख देशों व प्रमुख राजनेताओं के लिए भयावह स्थिति को जन्म दे सकती है।

इससे भारी अशान्त वातावरण पैदा हो सकता है। आम जन में रोष व विद्रोह उत्पन्न हो सकता है।

त्त दिस बर को गुरु का वक्री होना व संवत के अन्त तक वक्री रहना तथा फरवरी ख्क्भ् से मार्च ख्क्भ् तक शनि-राहु व मंगल का साथ होना यह ग्रह-स्थिति तथा इसके साथ-साथ मंगल का अतिचारी होना - आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक दृष्टि से यह सभी ग्रह स्थिति उग्रवाद, प्राकृतिक प्रकोप आदि से भारी जान व माल का नुकसान कराने वाली भयावह नजर आती है। भगवान रक्षा करें।

यूरोपीय देश

क जनवरी ख्क्ब माध्य रात्रि :

ख्ख जनवरी तक की ग्रह स्थिति यूरोपीय कुछ देशों में कहीं-कहीं प्राकृतिक आपदाओं को जन्म दे सकती है तो कहीं भारी हिमपात व कहीं समुद्री तूफान से हानि के योग बनाती है।

ब फरवरी ख्क्ब से ख्ब मार्च तक शनि, मंगल, राहु इन तीनों का तुला राशि में होना। क मार्च को शनिवारी अमावस्या का होना, ख मार्च को शनि का वक्री होना, ये सभी खलत्रयी

संबंध कई अनसोची घटनाओं को जन्म दे सकता है। कहीं उग्रवाद तो कहीं प्राकृतिक आपदा तो कहीं यान दुर्घटना आदि से भारी जान व माल की हानि के योग बन सकते हैं तो कहीं किसी व्यक्ति विशेष के निधन व हत्या से शोक समाचार मिल सकते हैं।

मंगल, राहु व शनि क– मई ख्क्ब तक वक्री रहेंगे व स्त्र मई तक बुध भी अस्त रहेगा। चैत्र मास में भ् मंगलवार का होना ये स□ ाी किसी विशेष दुर्घटना को जन्म दे सकते हैं। कहीं प्रतिष्ठित व्यक्ति का निधन या हत्या या सŽाा हस्तांतरण का संकेत मिलता है।

क्ब अप्रैल से क्फ मई ख्क्ब तक शनि–राहु का सूर्य केतु से क/स्त्र समसप्तक योग किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए भारी अशांति व चुनौती भरा हो सकता है। सिंह, वृष, तुला व कु□भ राशि वाले राजनेताओं व प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए यह समय अग्निपरीक्षा चुनौतीपूर्ण हो सकता है। साथ ही स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ठीक नहीं होगा।

ख मई को मंगल का मार्गी होना, ख्फ मई को शुक्र का मेष राशि में आकर शनि–राहु के साथ क/स्त्र समसप्तक योग बनाना, यूरोपीय देशों में कहीं भारी प्राकृतिक आपदा को जन्म दे सकता है।

प मई को बुध का आर्द्रा नक्षत्र में आकर स्त्र जून को वक्री होना शुक्र मंगल का म/त्त षडास्टक योग व शनि–राहु का शुक्र केतु से क/स्त्र समसप्तक योग कहीं अतिवृष्टि तो कहीं तूफान से हानि का संकेत देता है। क्भ जून को मिथुन राशि में आकर सूर्य का वक्री बुध से मेल करना, क्त्त जून को वृष राशि में स्थित शुक्र, शनि व राहु के साथ इसका म/त्त षडास्टक योग बनाना, क– जून को गुरु का कर्क राशि में आकर उच्च का होना साथी शनि की दृष्टि में आना (दशम दृष्टि) यह स□ाी योग भारी तूफान व बाढ़ से विनाश का संकेत देते हैं। कुछ देशों में दुभिक्ष की स्थिति से शासक वर्ग को परेशानी में डाल सकता है।

ख्त्त मई से क्फ जून की ग्रह स्थिति यूरोपीय कुछ देशों में प्राकृतिक आपदाओं को जन्म दे सकती है।

क्प जुलाई से संवत के अंत तक राहु कन्या राशि में रहेंगे। क्ष जुलाई से प सित□बर तक शनि–मगल दोनों तुला में रहेंगे। यह स्थिति राजनेताओं व जनसाधारण के लिए संकटपूर्ण हो सकती है। प्राकृतिक आपदाएं या उग्रवाद या जातिवाद जनित हमलों को जन्म दे सकती है। कुछ देशों को नस्लवाद या प्राकृतिक आपदाओं से जूझना पड़ सकता है।

ब सित□ बर को मंगल का अपनी वृश्चिक राशि में प्रवेश क को बुधवारी प्रतिपदा व क्त्र को बुधवारी संक्रांति, ख्ब को बुधवारी अमावस्या व ख अक्तूबर को शुक्र का अस्त होना व ट अक्तूबर को चन्द्रग्रहण का होना किसी व्यक्ति विशेष के निधन या पदच्युत होने का संकेत देता है।

ख्त्र नव□बर से प जनवरी ख्क्भ तक मंगल का मकर राशि में चलना ख्- नवंबर ख्क्ब से मंगल का अस्त होना यह संकेत देता है कि नवंबर में भारत का मंगल ग्रह पर यान भेजना सफल हो सकता है। इससे मंगल ग्रह के रहस्य को जानने में सहायता मिल सकती है। एक बड़ी सफल उपलŽधी प्राप्त हो सकती है। भारत की इससे कुछ यूरोपीय व अमेरिका आदि देशों को आश्चर्य व जलन हो सकती हे। साथ ही भय उत्पन्न हो सकता है।

जापान, जर्मन, आस्ट्रिया आदि कुछ देशों में प्राकृतिक आपदा के भी संकेत मिलते हैं।

क जनवरी ख्क्भ की गृह स्थित के अनुसार कुण्डली मैं शनि व गुरू की मंगल व शुक्र पर विशेष दृष्टि होने के साथ ही ख्- नव□बर ख्क्ब से क्ख फरवरी ख्क्भ तक मंगल का अतिचारी होना कर्क राशि में गुरू का वक्री होना दुर्भिक्ष की स्थिति बनाता है। इससे फ्रांस आदि कहीं यूरोपीय देश में राष्ट्रनायक के विरूद्ध सेना द्वारा विद्रोह करना भी संभव हो सकता है। कहीं राष्ट्रव्यापी आंदोलन तो कहीं हत्याकांड जैसी अघटित अनहोनी घटनाऐं घट सकती है। भगवान रक्षा करें।

मुस्लिम राष्ट्र

हिजरी सन् क्प्भ

भ नव□बर ख्क्प

क्त्र बजकर ख्त्र मिनट सूर्यास्त समय

ग्रहों की स्थिति भ्‌ नव□बर ख्क्फ शाम स्त्र बजकर ख्त्र मिनट सूर्यास्त पर नीच के सूर्य के साथ उच्च के शनि का होना साथ ही वक्री राहु व बुध का होना कुछ मुस्लिम देशों अफगान, पाकिस्तान , ईरान-ईराक व खाडी के कुछ देशों के लिए आर्थिक व राजनैतिक समस्या जनक होना संकेत करता है कहीं उग्रवाद तो कहीं नेतृत्व की तो कहीं आर्थिक समस्या का जन्म दाता साबित हो सकता है।

इस समय में अफगान में आर्थिक स्थिति विकट रह सकती है। अमेरिका सहायता के लिए अपने स्वार्थ हेतू आगे आ सकता हे। गुरू शुक्र का क/स्त्र समसप्तक योग भ्‌ दिस□बर ख्क्ब तक होना, क्भ्‌ नव□ बर तक राहु बुध व सूर्य का साथ रहना, शनिराहु का क्क जुलाई ख्क्ब तक साथ होना। मुस्लिम राष्ट्रों की स्थिति को चिंतायुक्त बना सकता है।

भारत की पाकिस्तान के साथ जो उ□□ीदें नवाज शरीफ के आने पर जगी ीी वे नकारा सिद्ध हो सकती है। शरीफ को अपने देश में झुकना पड़ सकता है इसके लिए मुस्लिम देशों की आर्थिक स्थिति चरमराती नजर आएगी। ईरान व सीरिया के स□ बन्ध अमेरिका व कुछ यूरोपीय देशों ब्रिटेन आदि से बिगड़ सकते हैं व कहीं युद्ध की स्थिति बन सकती है।

भारत को भी कुछ सीमाओं पर उग्रवाद व हिंसाजनक गतिविधियों का सामना करना पड़ सकती है। स्थिति काफी बिगड़ सकती है।

शनि मंगल का तुला में साथ होना, पाकिस्तान की शशि कन्या में राहु का आना कुछ मुस्लिम राष्ट्रों की आंतकवादी नीतियों को बल देकर उकसाएगा, जिससे कहीं-कहीं आंतरिक क्रान्तियां जन्मेगी कहीं रासायनिक अस्त्रों का प्रहार होगा तो कहीं प्राकृतिक आपदाऐं भी जान-माल का नुकसान कर सकती हैंस्त्र

इस समय में कहीं-कहीं प्रधान नेताओं के लिए खतरे का भी संकेत मिलता है। कहीं कहीं उग्रवादी संघटनों के हावाी होने के भी संकेत मिलते हैं। ब सित□बर ख्क्ब से अक्तूबर ख्क्ब तक बुध-राहु, शनि-बुध व सूर्य-राहु के योग □ ी भीषण प्राकृतिक आपदाओं तथा कही

हिंसक घटनाओं से कुछ अरब व मुस्लिम राष्ट्रों में हानि व अशान्ति के संकेत देते हैं। कहीं सेना का सŽा पर काबिज होना या प्रयास करना संभव हो सकता है।

हिजरी सन् क्ब्फ्म

ख्म अक्तूबर ख्क्ब

रविवार क्त्र:फ्म

ख्म अक्तूबर ख्क्ब की यह ग्रह स्थिति ख अक्तूबर से ख्म नव□बर ख्क्ब तक शुक्र का अस्त रहना, मुस्लिम राष्ट्र कृष्टपंथी व तालिबानी देश पाकिस्तान आदि कहरता के रूप में उभर सकते हैं।

अफगान, पाकिस्तान में शिया सुन्नी टकराव उभर कर खतरा बन सकते हैं। बलूचिस्तान, पाकिस्तान द्वारा समर्थित तालिबान द्वारा अफगान में पैर जमा लेने पर पाक सीमाओं पर पाक को चुनौती दे सकता है तथा अर्थव्यवस्था को खराब कर सकता है।

कुछ राष्ट्रों में आंतरिक कलह उभर कर भी आपसी टकराव को जन्म दे सकता है। आंतरिक कलह, आंतकवाद, नस्लवाद आदि टकरावों द्वारा या प्राकृतिक प्रकोपों द्वारा भारी जान-माल की हानि के भी संकेत मिलते हैं।

भगवान आपकी रक्षा करें

विष्णु शर्मा